

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

Kirhindih, Kumhau Station Road, Shivsagar, Sasaram, Rohtas-82111

B.Ed. SYLLABUS

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

Kirhindih, Kumhau Station Road, Shivsagar, Sasaram, Rohtas-821115

Contact us +91 8789036195, +91 9470014145

Web: www.shakuntalamcollege.in

Mail us shakuntalamteacherseducation@gmail.com

VEER KUNWAR SINGH UNIVERSITY, ARA

B.Ed. SYLLABUS

Year-1

Code	Course Title	Marks			
		Credit	Practicum	Theory	Total
C-1	Childhood and Growing Up	4	20	80	100
C-2	Contemporary India and Education	4	20	80	100
C-3	Learning and Teaching	4	20	80	100
C-4	Language across the Curriculum	2	10	40	50
C-5	Understanding Disciplines and Subject	2	10	40	50
C-6	Gender, School and Society	2	10	40	50
C-7a	Pedagogy of a School Subject : Part I	2	10	40	50
EPC 1	Reading and Reflection on Texts	2	10	40	50
EPC 2	Drama and Art in Education	2	10	40	50
EPC 3	Critical Understanding of ICT	2	10	40	50
Engagement with the Field : Tasks and Assignments for Course 1-6 & 7a.		—	—	—	—
Total		26	130	520	650

Year-2

Code	Course Title	Marks			
		Credit	Practicum	Theory	Total
C-7b	Pedagogy of a School Subject : Part II	2	10	40	50
C-8	Knowledge and Curriculum	4	20	80	100
C-9	Assessment for Learning	4	20	80	100
C-10	Creating an Inclusive School	2	10	40	50
C-11	Optional Courses (the following four options)	2	10	40	50
	(a) Basic Education				
	(b) Health, Yoga and Physical Education				
	(c) Guidance and Counseling				
	(d) Environmental Education				
EPC-4	Understanding the Self	2	10	40	50
School Internship		10	200*	50*	250
Engagement with the Field : Tasks and Assignments for Courses 7b & 8-10.		—	—	—	—
Total		26	280	370	650

C-1 : Childhood and Growing Up

इकाई-1. शिक्षार्थी : बचपन और विकास

- बचपन की अवधारणा : ऐतिहासिक व समाकालीन परिप्रेक्ष्य, प्रमुख विमर्श।
- बचपन के दौरान प्रमुख कारक : परिवार, पड़ोस, समुदाय और विद्यालय।
- बच्चे, बचपन और उनका विकास : समकालीन वास्तविकता, बिहार के विशेष सन्दर्भ में।

इकाई-2. मानव विकास की समझ

- मानव विकास में प्रमुख अवधारणाएँ : वृद्धि, परिपक्वता एवं विकास की अवधारणा; वृद्धि रेखा तथा मानव विकास के सन्दर्भ में इसकी उपयोगिता; विकास के बुनियादी सिद्धान्त।
- शिक्षार्थी का विकास : शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक; इनके बीच का अन्तर्सम्बन्ध और शैक्षिक निहितार्थ (पियाजे, इरिक्सन, कोह्लबर्ग और गिलिगन के सिद्धान्तों के विशेष सन्दर्भ में)।

इकाई-3. किशोरावस्था में शिक्षार्थी

- किशोरावस्था की अवधारणा : रूढ़िगत मान्यताएँ, सही समझ की जरूरत, प्रमुख मुद्दे और कारक।
- किशोरावस्था को विशेष ध्यान में रखते हुए विकास की अवस्थाओं एवं उनकी विशेषताओं की समझ।
- किशोरावस्था में शिक्षार्थियों की गतिविधियाँ, आकांक्षाएँ, द्वन्द्व एवं चुनौतियाँ और उनसे बर्ताव करने के तरीके।

इकाई-4. समाजीकरण और शिक्षार्थी का सन्दर्भ

- समाजीकरण की अवधारणा : प्रमुख विमर्श, इसके माध्यम के रूप में शिक्षा तथा प्रमुख कारक।
- समाजीकरण की संस्थाएँ एवं उनकी भूमिका : परिवार, समुदाय, विद्यालय, मित्रमण्डली, शिक्षक, मीडिया, बाजार, अन्य औपचारिक व अनौपचारिक संस्थाएँ; सामाजिक संस्थाएँ जैसे संस्कृति, वर्ग, जाति, जेण्डर आदि।
- समाजीकरण की प्रक्रिया और सामाजिक वास्तविकताएँ : असमानता और इनका बच्चों व किशोरों पर पड़ता प्रभाव।

इकाई-5. शिक्षार्थियों में विविधता की समझ

- मानवीय विविधता की प्रकृति एवं अवधारणा : सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता।
- मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के आधार पर भिन्नताओं के आयाम : बौद्धिकता, क्षमता, अभिरुचि, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, व्यक्तित्व।
- विविध सन्दर्भों के शिक्षार्थियों की समझ : सामाजिक, सांस्कृतिक, समुदाय, धर्म, जाति, वर्ग, जेण्डर, भाषा और भौगोलिक स्थिति, मीडिया, बाजार, तकनीक व वैश्वीकरण।
- विद्यालय में विविधता की समझ।

C-2 : Contemporary India and Education

इकाई-1. भारत में शिक्षा : अतीत से वर्तमान तक

- वैदिक कालीन और बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था पर चिन्तन-मनन, गुण-दोष तथा प्राचीन शिक्षा केन्द्र।
- मध्यकाल में शिक्षा, मकतब, मदरसा व संस्कृत शिक्षा।
- अठारहवीं शताब्दी के दौरान की देशज शिक्षा व्यवस्था।

इकाई-2. ब्रिटिश तथा स्वतन्त्रता पश्चात् शिक्षा

- ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान उभर कर आयी शिक्षा व्यवस्था : मिशनरी स्कूल, ब्रिटिश राज के अन्तर्गत गठित औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था; भारतीयों द्वारा गठित शैक्षिक संस्थाएँ एवं आन्दोलन (जैसे कि यंग बंगाल आन्दोलन, देवबंद, आयसमाज, अलीगढ़, सत्य शोधक समाज, जामिया स्कूल, बुनियादी शिक्षा)।
- स्वतन्त्रता पश्चात् भारत में शिक्षा का विकास : प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की समस्याएँ।
- बिहार में शिक्षा का ऐतिहासिक विकास—सभी के लिए शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएँ।

इकाई-3. शिक्षा की समझ

- शिक्षा : महत्त्व एवं प्रकृति; 'शिक्षित व्यक्ति कौन है' इसकी विश्लेषणात्मक समझ।
- भारतीय चिन्तकों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का विश्लेषणात्मक समझ : सैयद अहमद खाँ, ज्योतिबा फुले, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्दो, पण्डित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जे. कृष्णमूर्ति।
- पाश्चात्य चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक समझ : प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी, पॉलो फ्रेरे।
- गाँधी के 'हिन्द स्वराज' और टैगोर के 'शिक्षा' के माध्यम से शिक्षा की समझ।

इकाई-4. समकालीन भारतीय शिक्षा और इसके मुद्दे

- शिक्षा का सार्वभौमीकरण : शिक्षा का अधिकार तथा शिक्षा तक बच्चों की सार्वभौमिक पहुँच।
- शिक्षा में असमानता : सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों का सन्दर्भ, विद्यालयों की शहरी व ग्रामीण अवस्थित का प्रभाव; सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक आयाम।
- राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय तनाव, अशान्ति, सामुदायिक द्वन्द, सामाजिक अन्याय का शिक्षा पर पड़ते प्रभाव की समझ।
- समान विद्यालय प्रणाली की संकल्पना : सी.एस.एस. रिपोर्ट (बिहार सरकार) के विशेष सन्दर्भ में।

इकाई-5. शैक्षिक नीतियों के आलोक में विद्यालय की समझ

- विद्यालय का नाम एवं प्रकार : नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आलोक में विकास; भारत और विशेष रूप से बिहार में विद्यालयों की समकालीन संरचना को समझने के स्रोत के रूप में।
- विद्यालय की पाठ्यचर्या : नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आलोक में विकास; विद्यालयी पाठ्यचर्या में समकालीन बदलावों की समझ, बिहार विशेष को ध्यान में रखते हुए।
- विद्यालय में मूल्यांकन व्यवस्था : प्रमुख बदलावों से सम्बन्धित नीतिगत परिप्रेक्ष्य, बिहार के विद्यालयों में मूल्यांकन व्यवस्था का सन्दर्भ।

C-3 : Learning and Teaching

इकाई-1. अधिगम से सम्बन्धित अवधारणाएँ

- अधिगम/सीखना : विभिन्न विचारों से परिचय।
- अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक।
- सीखने में एकाग्रता की भूमिका एवं इसका संवर्धन।
- अन्तर्सम्बन्धों की विश्लेषणात्मक समझ : अधिगम और विकास, अधिगम और अभिप्रेरणा, अधिगम और बुद्धि।

इकाई-2. अधिगम के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

- अधिगम से सम्बन्धित सिद्धान्तों के विकास का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
- अधिगम से सम्बन्धित सिद्धान्तों की समझ : व्यवहारवादी, मानवतावादी, संज्ञानवादी, सूचना-प्रक्रियाकरण मत, सामाजिक-सर्जनवादी दृष्टिकोण।

इकाई-3. अधिगम और शिक्षण

- अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित विविध दृष्टिकोणों की समझ : शिक्षक-केन्द्रित, विषय-केन्द्रित एवं बाल-केन्द्रित; 'ज्ञान के सम्प्रेषक', 'आदर्श', 'सुगमकर्ता' एवं 'सह-अधिगमकर्ता' के रूप में शिक्षक।
- शिक्षण के सामाजिक-सर्जनवादी परिप्रेक्ष्य एवं इसके निहितार्थों की समझ।
- सृजनात्मक अधिगम : अवधारणा एवं शिक्षणशास्त्रीय निहितार्थों की समझ।
- अधिगम-शिक्षण के लिए सुगम माहौल का निर्माण : प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियाँ।

इकाई-4 : कक्षायी प्रक्रियाएँ एवं सीखने की योजना

- कक्षायी प्रक्रियाएँ : प्रभावी कारक; प्रमुख चुनौतियाँ, समय प्रबन्धन, शिक्षक का सम्प्रेषण कौशल, शिक्षार्थियों की भूमिका।
- विभिन्न कक्षायी गतिविधियों के अनुसार कक्षाकक्ष की बैठक व्यवस्था।
- कक्षायी गतिविधियों को पाठ्यचर्या, शिक्षण शास्त्र एवं शिक्षण संसाधनों के साथ जोड़ना।
- कक्षाकक्ष शिक्षण के सन्दर्भ में माइक्रो-टीचिंग और ब्लूम की टेक्सोनोमी का आलोचनात्मक समझ।
- 'सीखने की योजना' की अवधारणा को समझना : पारम्परिक पाठ योजना को बदलकर सीखने की योजना का प्रयोग।

इकाई-5. अधिगम, शिक्षण : प्रमुख मुद्दे एवं चुनौतियाँ

- अधिगम और शिक्षण : विद्यालयी प्रक्रियाओं की समकालीन वास्तविकता।
- प्रमुख मुद्दे : मार्किंग बनाम ग्रेडिंग, बच्चों को फेल न करने की नीति (अनवरोध की नीति), वस्तुनिष्ठता बनाम विषयनिष्ठता।
- अधिगम और शिक्षण का जुड़ाव : युक्तियाँ एवं चुनौतियाँ; शिक्षक की भूमिका।

C-4 : Across the Curriculum

इकाई-1. शिक्षार्थी और उनकी भाषा

- भाषा का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, महत्व, कार्य एवं पृष्ठभूमि।
- भाषा और धर्म, भाषा और कक्षा, साहित्य का भाषा में योगदान।
- गृहभाषा (मातृभाषा) तथा विद्यालयी भाषा/द्वितीय भाषा, औपचारिक और अनौपचारिक भाषा।
- मौखिक और लिखित भाषा—अर्थ, सिद्धान्त, उद्देश्य, महत्व एवं सह-सम्बन्ध।

इकाई-2. भाषा, कौशल और भाषा प्रयोगशाला

- भाषा में मौखिक अभिरुचि, मौखिक सिद्धान्तिक भाषा की अभिरुचि, छात्राध्यापकों में मौखिक हावभाव/भाषण का विकास, सीखने के उपकरण का विचार-विमर्श, कक्षा-कक्ष में प्रश्न पूछना, पठन-पाठन में शिक्षण कौशल का पाठ्य-पुस्तकों द्वारा विकास, गलत उच्चारण की समस्या और समाधान।
- भाषा कौशल—(एल.एस.डब्ल्यू.आर—सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना) अर्थ, महत्व, सहसम्बन्ध, विधियाँ तथा तकनीकियाँ।
- भाषा प्रयोगशाला—आवश्यकता, महत्व, लाभ, इसकी शिक्षक प्रशिक्षण में उपयोगिता।

इकाई-3. विद्यालयी पाठ्यचर्या में कौशल

- श्रवण कौशल : उच्चारण, दाब, लय तथा मौखिक अभिरुचि।
- वाचन कौशल : उच्चारण, दाब, लय तथा मौखिक अभिरुचि।

- लेखन कौशल : लेखक के पहलू—आकार, ध्वनि, अर्थ, शब्द-विन्यास, संकेतन, शब्द, वाक्य, लेखन-अभिव्यक्ति, समझना एवं तार्किक संक्षेपण करने की सामर्थता, लेख, निबन्ध, पत्र, कहानी लेखन, कविता, घटना का वर्णन लिखना इत्यादि।
- पाठन कौशल : व्यंजन, स्वर, शब्द, वाक्य, पहचान, समझ, मन्द तथा उच्च पठन।

C-5 : Understanding Disciplines and Subjects

- यह विषयपत्र प्रशिक्षुओं को शिक्षण के लिए तैयार करने में आधार का कार्य करेंगे जिसमें प्रशिक्षुओं को अपने द्वारा चुने गए दो शिक्षण विषयों के स्कूली पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करना अनिवार्य होगा। इस विषयपत्र को रखने के पीछे दो प्रमुख उद्देश्य हैं। पहला यह कि प्रशिक्षुओं में उन स्कूली विषयों के ज्ञान को मजबूत करना, जिनके भावी शिक्षक वे बनने वाले हैं। दूसरा यह कि अपने द्वारा शिक्षण किए जाने वाले विषय के अद्यतन ज्ञान से उनको अवगत कराना क्योंकि उन्होंने पहले जब उस विषय को पढ़ा होगा और आज उस विषय में जो नए ज्ञान जोड़े गये हैं, उनके बीच कई अन्तर आ चुके होंगे। इस विषयपत्र के अन्तर्गत प्रशिक्षु विषयों की पाठ्यचर्या को समझेंगे और साथ में उनसे सम्बन्धित माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के पाठ्यपुस्तकों से महत्वपूर्ण अवधारणाओं का अध्ययन करेंगे। इसके लिए बिहार बोर्ड अथवा सी.बी.एस.ई. बोर्ड में चलने वाली पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों (एस.सी.ई.आर.टी./एन.सी.ई.आर.टी.) को लिया जा सकता है।

C-6 : Gender, School and Society

इकाई-1. जेण्डर की समझ

- जेण्डर और लिंग की अवधारणा।
- जेण्डर पक्षपात, जेण्डर सम्बन्धी रूढ़िगत मान्यताएँ, जेण्डर सशक्तिकरण की समझ।
- भारत में जेण्डर का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
- जेण्डर और पितृसत्ता।

इकाई-2. जेण्डर और समाजीकरण

- जेण्डर सम्बन्धी सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य : समाजीकरण का सिद्धान्त, जेण्डर विभेद, संरचनात्मक सिद्धान्त, पुनर्रचनात्मक सिद्धान्त।
- जेण्डर अस्मिता और समाजीकरण की प्रक्रियाएँ : धर्म, परिवार, समाज, मीडिया आदि की भूमिका।

इकाई-3. जेण्डर अध्ययन : परिप्रेक्ष्यों का विकास एवं शिक्षक

- जेण्डर से सम्बन्धित शोधों का सन्दर्भ।
- जेण्डर सम्बन्धी प्रमुख सामाजिक सुधार आन्दोलनों की समझ।
- जेण्डर समानता में शिक्षा की भूमिका : लड़कियों के शिक्षा का महत्व।
- शिक्षक की परिवर्तनकारी एवं जेण्डर संवेदनशील भूमिका।

EPC-1 : Reading and Reflection on Texts

इकाई-1. प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य

इस इकाई में प्राचीन एवं मध्यकाल के कुछ वैसे साहित्यों का पठन किया जाएगा जो उस समय की शिक्षा को दर्शाते हैं। इस दिशा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है—

- उपनिषदों से संवाद अंश।
- पंचतन्त्र की कहानियाँ।
- बौद्ध साहित्य से कथाएँ (जातक, थेरी एवं थेर गाथा)।
- जैन साहित्य से कथाएँ।
- गुलिंस्ता-बोस्ता से कथाएँ एवं अन्य साहित्य।

इस इकाई में और भी कई प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों को जोड़कर संवर्धित किया जा सकता है।

इकाई-2. आधुनिक और समकालीन साहित्य

इस इकाई में वैसे आधुनिक व समकालीन साहित्यों को पढ़ने पर जोर है जिसमें शिक्षा के मुद्दों को सार्थक तरीके से उठाया गया है। इस इकाई से विभिन्न भाषाओं व सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भों में साहित्यों को प्रस्तुत किया गया है। इस दिशा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है—

- बिनोवा भावे की रचना 'शिक्षक'।
- प्रो. डी. एस. कोठारी द्वारा रचित 'शिक्षा और जीवन मूल्य'।
- महादेवी वर्मा कृत 'शिक्षा का उद्देश्य'।
- श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित 'रागदरबारी' के अंश।
- कृष्ण कुमार द्वारा रचित 'चुड़ी बाजार में लड़की' से 'अभिमन्यु की शिक्षा' वाला अंश।
- प्रो. अनिल सद्गोपाल का लेख 'साक्षरता : राष्ट्रीय ध्येय या शैक्षिक मापदण्ड'।
- अवधेश प्रीत द्वारा रचित 'तालीम'।
- तुलसीराम द्वारा रचित 'मुर्दहिया'।
- डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी का लेख 'एक स्कूल का बयान'।
- बिरेन्द्र सिंह रावत का लेख 'क्या कहते हैं सवाल'।

उपर्युक्त साहित्यों के अलावा और भी साहित्यों को इस इकाई में जोड़ने की पूरी छूट है।

इकाई-3. स्थानीय साहित्य

यह इकाई शिक्षा के मुद्दों से सम्बन्धित स्थानीय साहित्यों के पठन पर आधारित है, जो निम्नलिखित हो सकते हैं—

- स्थानीय कथाएँ
- लोक गीत
- लोकोक्तियाँ
- जीवन कथाएँ।

संस्थान अपने स्तर पर इन साहित्यों का संकलन करेगी जिसमें इसके शिक्षक एवं प्रशिक्षुओं की भूमिका होगी।

EPC-2 : Drama and Art in Education

इकाई-1. प्रदर्शन कला के रूप में नाट्य

- नाट्य : अवधारणा की समझ और शिक्षा में इसका महत्व।
- नाट्य एक शिक्षणशास्त्र के रूप में।
- नाट्य का आयोजन : तैयारी और संसाधन, ड्रैमेटिक सोसाईटी या नाट्य समूह का निर्माण।
- नाट्य के स्वरूप : एकल, समूह।
- नाटक करना : कहानी, संवाद, चरित्र, संकेत, मंच की सजावट, रौशनी, भिन्न-भिन्न स्थितियों का निर्माण करना।
- भारतीय और क्षेत्रीय नाट्य परम्पराओं का ज्ञान।
- शिक्षार्थियों में नाट्य कला को प्रोत्साहित करना।
- नाट्य प्रदर्शन की समीक्षा और आकलन।

इकाई-2. शिल्प कला एवं शिल्प

- दृश्य कला एवं शिल्प की समझ तथा शिक्षा में उनका महत्व।
- दृश्य कला एवं शिल्प एक शिक्षणशास्त्र के रूप में।
- दृश्य कला एवं शिल्प : विविध स्वरूप, बुनियादी संसाधन तथा उनकी उपयोगिता।
- क्षेत्रीय लोक कलाओं एवं शिल्प परम्पराओं का ज्ञान।
- समकालीन दृश्य कलाओं, शिल्पों एवं कलाकारों का ज्ञान।
- शिक्षार्थियों में दृश्य कला एवं शिल्प को प्रोत्साहित करना।
- दृश्य कला एवं शिल्प की समीक्षा और आकलन।

इकाई-3. कला-आधारित अधिगम और शिक्षक की भूमिका

- नाट्य कला को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव।
- दृश्य कला एवं शिल्प को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव।
- विद्यालय और कक्षाकक्ष को कला-आधारित अधिगम के जगह के रूप में देखना।
- कला आधारित अधिगम के लिए शिक्षक की तैयारी।

EPC-3 : Critical Understanding of ICT

इकाई-1. सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) से परिचय

- सूचना एवं संचार तकनीकी—अवधारणा एवं शिक्षा के लिए महत्व।
- सूचना एवं संचार तकनीकी—लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- सूचना तकनीकी का अर्थ, आवश्यकताएँ एवं भारत में आई.सी.टी.ई. शिक्षा का विकास (सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के पक्ष में)।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधन—मध्यम, बहुमाध्यम शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की भूमिका।
- टेली कान्फ्रेंसिंग, कम्प्यूटर, कम्प्यूटर सहायक अधिगम तथा शिक्षण एवं इण्टरनेट, इलैक्ट्रॉनिक मेल।

इकाई-2. कम्प्यूटर की समझ

- परम्परागत एवं आधुनिक सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीकियाँ, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के लाभ एवं उपयोगिता।
- ई-लर्निंग की प्रकृति, विशेषताएँ, विभिन्न प्रारूप एवं शैलियाँ।
- ई-विषय वस्तु का वर्तमान में शिक्षा में प्रयोग, ई-मैगजीन, ई-जर्नल्स, एडूकॉम्प स्मार्ट क्लास कार्यक्रम।
- जनसंचार माध्यम—संचार माध्यमों का महत्व, प्रकार, ओवर हैड प्रोजेक्टर, रेडियो, टेपरिकॉर्डर, भाषा प्रयोगशाला।
- कक्षा शिक्षण के लिए पी.पी.टी., स्लाइड्स बनाना और उनका प्रेजेंटेशन करना।
- शिक्षा में समाचार-पत्र की उपयोगिता।

इकाई-3. आई.सी.टी. समर्थित कक्षा की संकल्पना

- ऑडियो-विजुअल सामग्रियों के प्रयोग से कक्षा में सीखने को रोचक व सहज बनाना।
- कम्प्यूटर चलाने का ज्ञान, चालू व बन्द करना, इसके विभिन्न हार्डवेयर के कार्य की सामान्य जानकारी : कम्प्यूटर के डेस्कटॉप और मेमोरी के कार्यों की सामान्य जानकारी, वर्ड प्रोसेसिंग, पावर प्वाइंट का प्रयोग, एक्सेल, स्प्रेडशीट, पेण्ट, फाइल, डॉक्यूमेण्ट, सॉफ्ट कॉपी, आदि का अर्थ एवं कार्य।
- कम्प्यूटर एक लर्निंग टूल के रूप में : अपना ई-मेल आई.डी. बनाना, ई-मेल भेजना, इण्टरनेट पर उपयोगी सूचनाओं की खोज के तरीके को समझना तथा उसका उपयोग करना, डाउनलोडिंग सीखना, ऑनलाईन फॉर्म भरना।